

दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥

निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूं लोक फैली उजियारी ॥

शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥

रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरश करत जन अति सुख पावे ॥

तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥

प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥

रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥

धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ॥

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं ॥

क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जात बखानी ॥

मातंगी अरु धूमावति माता।

भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी ।
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ॥

केहरि वाहन सोह भवानी ।
लांगुर वीर चलत अगवानी ॥

कर में खप्पर खड्ग विराजै ।
जाको देख काल डर भाजै ॥

सोहै अस्त्र और त्रिशूला ।
जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥

नगरकोट में तुम्हीं विराजत ।
तिहुंलोक में उंका बाजत ॥

शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे ।
रक्तबीज शंखन संहारे ॥

महिषासुर नृप अति अभिमानी ।
जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥

रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥

परी गाढ़ संतन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥

अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका ॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥

प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहीं आवें ॥

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई ॥

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥

शंकर आचारज तप कीनो।
काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥

शक्ति रूप का मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो ॥

शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दर्ई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥

मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ॥

आशा तृष्णा निपट सतावें।
रिपू मुख मौही डरपावे ॥

शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥

करो कृपा हे मातु दयाला।

ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।

जब लागि जिऊं दया फल पाऊं ।

तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं ॥

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।

सब सुख भोग परमपद पावै ॥

देवीदास शरण निज जानी।

करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा सम्पूर्ण ॥

DurgaChalisa.com